ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 11 अंक 37 | 31 दिसम्बर, 2015 से 06 जनवरी, 2016 | दयानन्दाब्द 192 | सृष्टि सम्वत् 1960853116 | सम्वत् 2072 | पौ. कृ. 06

हरियाणा प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन जीन्द में हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न

हरियाणा के कोने-कोने से हजारों आर्यों ने भाग लेकर संगठन के प्रति दिया निष्ठा का परिचय

नशाबन्दी एवं गौहत्याबन्दी के लिए अभियान शुरू करने हेतु लिया गया संकल्प

आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के प्रधान एवं नशाबन्दी संघर्ष समिति हरियाणा के अध्यक्ष स्वामी रामवेश जी के संयोजकत्व में 13 दिसम्बर, 2015 को महर्षि दयानन्द पार्क, अर्बन स्टेट, जीन्द में हरियाणा प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन अत्यन्त हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ।

सम्मेलन का शुभारम्भ प्रातः यज्ञ के उपरान्त ध्वजारोहण के साथ हुआ। ध्वजारोहण सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के उपाध्यक्ष आचार्य सन्तराम जी के कर-कमलों से हुआ। अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द एवं अमर शहीद रामप्रसाद बिस्लिम की स्मृति में आयोजित होने वाले आर्य महासम्मेलन में युवा सम्मेलन, नशामुक्ति एवं बेटी बचाओ सम्मेलन तथा राष्ट्ररक्षा सम्मेलन मुख्य रूप से आयोजित किये गये। इस अवसर पर सर्वश्री हरिसिंह सैनी पूर्व मंत्री हरियाणा सरकार एवं संरक्षक आर्य समाज हिसार, स्वामी ओमवेश जी पूर्व गन्ना मंत्री, उ. प्र. सरकार, स्वामी चन्द्रवेश जी वेदाचार्य अध्यक्ष संन्यास आश्रम गाजियाबाद एवं आचार्य स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ टिटौली, रोहतक, श्री रणधीर सिंह रेढू एवोकेट पूर्व एडीशनल एडवोकेट जनरल हरियाणा, श्री बिरजानन्द महामंत्री सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्, श्री विजय कुमार आर्य मंत्री आर्य समाज नरवाना, जीन्द, श्रीमती कुसुम डांगी समाजसेविका, बहन पूनम आर्या अध्यक्ष बेटी बचाओ अभियान, बहन प्रवेश आर्या संयोजक, बेटी बचाओ अभियान, ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य अध्यक्ष सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्, हरियाणा, श्री जयपाल मलिक पूर्व निदेशक नेहरू युवा केन्द्र, श्री वीरेन्द्र लाठर मंत्री स्वामी इन्द्रवेश यज्ञशाला जुलाना, श्री देवेन्द्र आर्य, पूर्व प्रधान आर्य युवक परिषद् हरियाणा, प्रिं. आजाद सिंह उपमंत्री सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्, चौ. जगदीश सींवर सिरसा, डॉ. बलबीर सिंह आर्य जुलाना एवं प्रसिद्ध आर्य भजनोपदेशक श्री सहदेव बेधड़क, श्री हवा सिंह तूफान, पं. रामेश्वर आर्य व सुनील शास्त्री आदि ने उपस्थित जनसमूह को सम्बोधित किया। इस अवसर पर मास्टर सत्यवीर आर्य जुलाना की अध्यक्षता में कुछ विशिष्ट महानुभावों को सम्मानित किया गया। जिसका संयोजन जगफूल

शेष पृष्ठ 4 पर

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

सार्वदेशिक सभा के विशाल सभागार में मनाया गया

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान दिवस

स्वामी श्रद्धानन्द के बलिदान दिवस पर हम सबके जीवन में हो ऊर्जा का संचार – स्वामी आर्यवेश

सैकड़ों गणमान्य व्यक्तियों ने अर्पित किये श्रद्धासुमन

आर्य समाज के महान नेता, वीरता और बलिदान की प्रतिमूर्ति तथा गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति के पुनरुद्धारक स्वामी श्रद्धानन्द जी के बलिदान दिवस के पूर्व दिवस 22 दिसम्बर, 2015 को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा "दयानन्द भवन" में स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान दिवस सैकड़ों गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति में मनाया गया। इस अवसर पर सर्वप्रथम विशेष यज्ञ का आयोजन किया गया। इस विशेष यज्ञ के ब्रह्मा वेदों के प्रकाण्ड विद्वान्, त्यागी, तपस्वी स्वामी चन्द्रवेश जी रहे। मुख्य यजमान पद को श्री वेद प्रकाश भल्ला जी ने सुशोभित किया। यज्ञ के उपरान्त सभा के विशाल हाल में सभा का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रसिद्ध समाजसेवी तथा आर्य नेता वैद्य इन्द्रदेव जी ने की। इस अवसर पर दिल्ली, हरियाणा, उत्तर प्रदेश के आस–पास के क्षेत्रों से सैकड़ों गणमान्य व्यक्तियों ने उपस्थित होकर स्वामी श्रद्धानन्द जी को श्रद्धांजलि अर्पित की और उनके यशस्वी जीवन से ऊर्जा प्राप्त करने का अवसर प्राप्त किया। इस सभा में उपस्थित होने वालों में मुख्य रूप से स्वामी आर्यवेश जी, प्रसिद्ध समाजसेवी तथा आर्य नेता स्वामी अग्निवेश जी, डॉ. रघुवीर वेदालंकार, पं. माया प्रकाश त्यागी कोषाध्यक्ष सार्वदेशिक सभा, वैद्य इन्द्रदेव आर्य उपप्रधान सार्वदेशिक सभा, स्वामी चन्द्रवेश अध्यक्ष संन्यास आश्रम गाजियाबाद, आचार्य प्रेमपाल शास्त्री प्रधान पुरोहित सभा, स्वामी सोम्यानन्द, कै. अशोक गुलाटी नोएडा, श्री वेद प्रकाश शास्त्री, श्री रघुराज शास्त्री, आचार्य भद्रकाम वर्णी, श्री हरिचन्द्र आर्य, श्री राजेन्द्र सिंह, श्री रामनिवास, श्री हरिवीर सिंह आर्य–उ. प्र., श्री हरि सिंह चौहान, श्री ईश्वर सिंह आर्य, श्री आलोक कुमार राणा, श्री उदयवीर सिंह, श्री जगवीर सिंह, डॉ. धर्मपाल राणा, श्री रमेश अरोड़ा, श्री शिवमुनि वानप्रस्थी, प्रो. श्योताज सिंह महामंत्री बंधुआ मुक्ति मोर्चा, श्री वेद प्रकाश भल्ला, आचार्य सन्तराम उपप्रधान सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्, श्री रामकुमार सिंह, श्री बलजीत सिंह आदित्य, आचार्य गवेन्द्र शास्त्री, श्री विश्वनाथ शास्त्री, श्री मधुर प्रकाश शास्त्री, श्री नाहर सिंह वर्मा सहित अनेकों गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

सभा का प्रारम्भ आर्य समाज नोएडा के उपप्रधान कै. अशोक गुलाटी जी के कविता पाठ से हुआ। उन्होंने स्वामी श्रद्धानन्द तथा क्रांतिकारी रामप्रसाद बिस्मिल के ऊपर अत्यन्त सुन्दर कविता सुनाई।

इस अवसर पर सभा का संचालन कर रहे सार्वदेशिक सभा के यशस्वी प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने अपने भावपूर्ण सम्बोधन में स्वामी श्रद्धानन्द जी को वीरता, बलिदान की प्रतिमूर्ति तथा गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति का पुनरुद्धारक बताते हुए उनके जीवन की महत्त्वपूर्ण घटनाओं का अत्यन्त मार्मिक वर्णन करते हुए उपस्थित जन समूह को भाव विभोर कर दिया। उन्होंने कहा कि मानवता, सात्विकता, समर्पण, त्याग, सेवा के साकार रूप थे स्वामी श्रद्धानन्द।

स्वामी जी ने कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द जो पहले मुंशीराम के नाम से जाने जाते थे वे धर्म, कर्म, परोपकार, ईश्वर भक्ति से दूर रहने वाले व्यक्ति थे और स्वामी दयानन्द जी का सान्निध्य पाकर और उनके व्याख्यानों को सुनकर जब उनके ज्ञान चक्षु खुले तो ऐसे खुले कि उनकी प्रवृत्ति देवत्व की ओर जाग उठी तथा जीवन का सारा रंग–ढंग ही बदल गया। मुंशीराम पर प्रभु कृपा हुई तो वे पतित जीवन से उठकर प्रेरक जीवन की ओर चल पड़े। स्वामी जी ने कहा कि दलितों, पिछड़ों तथा अन्य निर्बल वर्गों के लोगों की सेवा तथा दलितोद्धार सभा की स्थापना करके उन्होंने इन सबको देश की मुख्यधारा से जोड़ने उनका जीवन स्तर सुधारने तथा समाज में सम्मान पूर्वक स्थान दिलाने के लिए जितनी सफलता प्राप्त की थी वह ऐतिहासिक थी। यदि आज के नेता और राजनीतिक दल उसी गम्भीरता से कार्य करते तो आज स्थिति कुछ और ही होती। स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि सच्चे अर्थों में हम स्वामी श्रद्धानन्द जी के महत्त्व, योगदान व विशेषताओं को जीवित रखना चाहते हैं। उनके प्रेरक जीवन से वर्तमान व आने वाली पीढ़ी को सुधारना चाहते हैं तो उनके मन्तव्यों, कार्यों व आदर्शों को व्यवहारिक रूप देकर स्वामी श्रद्धानन्द जी के विचार व्यक्तित्व तथा कद को जनता के सामने उपस्थित कर उनके व्यक्तित्व, कार्यों तथा विचारधारा को प्रकट करना चाहिए। उन्होंने कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन से प्रेरित होकर हम सब में ऊर्जा का संचार होना चाहिए तभी उनको श्रद्धांजलि देना सफल होगा।

सार्वदेशिक सभा के उपप्रधान तथा पुरोहित सभा के अध्यक्ष श्री प्रेमपाल शास्त्री जी ने इस अवसर पर सभा आयोजित करने के लिए सभा अधिकारियों का धन्यवाद ज्ञापित करते हुए कहा कि यह एक प्रशंसनीय कार्य है। उन्होंने कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द जी का पुण्य स्मरण करते हुए हम सब स्वामी श्रद्धानन्द जी के व्यापक व्यक्तित्व से कुछ प्रेरणा ग्रहण करें। उन्होंने कहा कि स्वामी जी ने अनेकों कार्यों के साथ सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य शिक्षा के क्षेत्र में किया। मैकाले की शिक्षा पद्धति के मुकाबले में उन्होंने प्राचीन गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली को महत्त्व दिया और बालक तथा बालिकाओं के लिए अलग–अलग गुरुकुल खोलकर प्राचीन शिक्षा पद्धति को विस्तार दिया। उन्होंने स्वामी श्रद्धानन्द जी को हिन्दू मुस्लिम एकता का प्रतीक बताया।

इस अवसर पर अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त समाज सेवी स्वामी अग्निवेश जी ने कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान दिवस मनाने के लिए हम सबको उनके जीवन से ऊर्जा ग्रहण करनी चाहिए और स्वामी श्रद्धानन्द जी को श्रद्धांजलि अर्पित करने का इससे अच्छा कोई कार्य नहीं हो सकता है कि हम सब संगठित हों और एक साथ मिलकर आर्य समाज का कार्य करें। स्वामी जी ने कहा कि इस प्रकार के कार्यक्रमों में हमें सभी वर्गों के लोगों को आमंत्रित करना चाहिए। उन्होंने कहा कि आर्य समाज के क्षेत्र में स्वामी दयानन्द के बाद यदि किसी का नाम आता है तो वे स्वामी श्रद्धानन्द जी ही थे। स्वामी जी ने स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन की प्रेरक घटनायें सुनाकर कहा कि आप सब भी स्वामी श्रद्धानन्द जी की तरह आर्य समाज में कार्य करें तो आर्य समाज को बहुत बड़ी सफलता प्राप्त हो सकती है। उन्होंने महर्षि दयानन्द जी की हत्या को एक गहरा षड्यन्त्र बताते हुए उसके रहस्य की जांच करने की मांग की। उन्होंने कहा कि आर्य समाज को सरकार से जोरदार मांग करनी चाहिए कि वह स्वामी श्रद्धानन्द जी का विशाल राष्ट्रीय स्मारक बनाये। स्वामी जी ने कहा कि आर्य समाज के द्वारा साम्प्रदायिकता को दूर करने के लिए तथा दलितोद्धार के लिए बढ़–चढ़कर कार्य करना चाहिए।

इस अवसर पर बंधुआ मुक्ति मोर्चा के महामंत्री प्रो. श्योताज सिंह जी ने स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन की विशेषताओं को इंगित करते हुए कहा कि दलितोद्धार के लिए स्वामी श्रद्धानन्द जी ने बहुत कार्य किया और उन्होंने महात्मा गांधी जी के सामने प्रस्ताव रखा था कि बड़े–बड़े नेताओं की सेवा के लिए दलित युवाओं को आगे लाया जाना चाहिए। लेकिन उनके प्रस्ताव को अनसुना कर दिया गया। उन्होंने कहा कि देश की आजादी का संघर्ष करते हुए उन्होंने अपने प्राणों का उत्सर्ग कर दिया।

सार्वदेशिक सभा के कोषाध्यक्ष पं. माया प्रकाश त्यागी जी ने स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन की उस घटना का वर्णन किया जिससे मुंशीराम पहले श्रद्धानन्द और बाद में महात्मा कैसे बने। त्यागी जी ने श्रद्धा के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए स्वामी श्रद्धानन्द जी की ईश्वर के प्रति श्रद्धा, समाज के प्रति श्रद्धा तथा शिक्षा के प्रति श्रद्धा का विस्तार से वर्णन किया। उन्होंने कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द जी के सपनों को साकार करने में यदि शिखर पर बैठा कोई व्यक्ति है तो वो स्वामी श्रद्धानन्द जी हैं। त्यागी जी ने स्वामी आर्यवेश जी की प्रशस्ति करते हुए कहा कि जब से स्वामी आर्यवेश जी ने सभा का कार्यभार संभाला है तबसे आर्य समाज निरन्तर प्रगति कर रहा है और नये–नये कार्यों को अंजाम दिया जा रहा है। उन्होंने कहा कि आप सब स्वामी जी के हाथ मजबूत करो और एकजुट होकर आर्य समाज को आगे बढ़ाओ।

विद्वान् पुरोहित श्री गवेन्द्र शास्त्री जी ने स्वामी श्रद्धानन्द जी को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि दयानन्द जी की विरासत को यदि कोई आगे बढ़ाने वाला था तो वे सर्वमेध यज्ञ करने वाले स्वामी श्रद्धानन्द जी ही थे। उन्होंने जीवन की घटनाओं का दर्शन कराते हुए कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द जी के बारे में जितना कहा जाये उतना कम है।

श्री जगवीर सिंह जी जो आर्य समाज शाहाबाद मोहम्मदपुरा के कर्णधार हैं, उन्होंने कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन से प्रेरणा लेकर संगच्छध्वम् के नारे से प्रेरणा लेकर एकजुट होकर स्वामी श्रद्धानन्द जी की तरह आर्य समाज के काम में जुट जायें। तभी हमारा श्रद्धानन्द बलिदान दिवस मनाना सार्थक होगा।

इस अवसर पर त्यागी, तपस्वी संन्यासी स्वामी चन्द्रवेश जी ने अपने उद्गार प्रकट करते हुए कहा कि आर्य समाज के नेता स्वामी श्रद्धानन्द जी का जीवन बहुआयामी था उन्होंने देश, धर्म, समाज तथा शिक्षा के क्षेत्र में जो योगदान दिया वह इतिहास की महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है। उन्होंने कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द जी का नाम जहां गुरुकुल कांगड़ी की स्थपना के कारण विश्व इतिहास में अमर है वहीं स्वाधीनता आन्दोलन का इतिहास भी स्वामी श्रद्धानन्द के योगदान की चर्चा के बिना अधूरा है। मेरा उनको शत्–शत् नमन।

इस अवसर पर आचार्य सन्तराम जी ने स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में किये गये योगदान की चर्चा करते हुए कहा कि उन्होंने प्राचीन गुरुकुलीय शिक्षा के लिए गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना की जो आर्य समाज की विश्व प्रसिद्ध संस्था है उन्होंने गुरुकुलीय शिक्षा के गुणों का वर्णन करते हुए कहा कि बच्चों में चरित्र निर्माण, सम्पूर्ण व्यक्तित्व विकास के लिए हम सबको गुरुकुलीय शिक्षा को अपनाना चाहिए। उन्होंने कहा कि वर्तमान शिक्षा प्रणाली अधूरी है शिक्षा मूल्य प्रधान तथा नैतिक तत्वों से परिपूर्ण होनी चाहिए।

इस अवसर पर कार्यक्रम के अध्यक्ष वैद्य इन्द्रदेव जी ने संगठन सूक्त का पाठ करते हुए स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन से प्रेरणा लेने की अपील करते हुए उनके व्यक्तित्व तथा कृतित्व की चर्चा की। उन्होंने कहा स्वामी श्रद्धानन्द जी को सच्ची श्रद्धांजलि यही होगी कि हम सब मिलकर संगठित होकर कार्य करें और गुरुकुलों की दशा को सुधारने का संकल्प लें। क्योंकि यदि गुरुकुल ठीक हो गये तो वहीं से विद्वान निकलेंगे और आर्य समाज बढ़ेगा। उन्होंने बच्चों को स्कूलों में आर्यों से सम्बन्धित जो भ्रामक पाठ पढ़ाया जा रहा है उसमें परिवर्तन कराने पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि प्रतिवर्ष यह बलिदान दिवस मनाया जाता है और इस पर्व से हम सबके अन्दर विशेष सन्देश तथा स्फूर्ति का संचार होना चाहिए यही उनको सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

इस अवसर पर श्री रामकुमार आर्य, श्री रघुवीर वेदाचार्य, श्री बलजीत सिंह आदित्य, श्री वेद प्रकाश शास्त्री, आचार्य भद्रकाम वर्णी, श्री रघुराज शास्त्री, स्वामी सोम्यानन्द सहित अनेकों गणमान्य व्यक्तियों ने स्वामी श्रद्धानन्द जी को राष्ट्र निर्माता, महान स्वतन्त्रता सेनानी, वीरता और बलिदान की मूर्ति प्रेरक गुरु आदि बताते हुए अपने श्रद्धा सुमन अर्पित किये। प्रीतिभोज के साथ सभा सम्पन्न हुई।

त्यागी, तपस्वी पूज्य स्वामी विवेकानन्द जी सरस्वती के ब्रह्मत्व में

5151 कुण्डीय गीता जन चेतना महायज्ञ

20 दिसम्बर, 2015 को कुरुक्षेत्र में समारोह पूर्वक सम्पन्न

वैदिक यज्ञ अनुसंधान संस्थान के तत्वावधान में आयोजित गीता जन–चेतना महायज्ञ 20 दिसम्बर, 2015 को भव्यता के साथ सम्पन्न हो गया। इस यज्ञ के ब्रह्मा के पद को आर्य जगत के प्रकाण्ड विद्वान, त्यागी, तपस्वी संन्यासी गुरुकुल प्रभात आश्रम के आचार्य स्वामी विवेकानन्द जी ने सुशोभित किया। उनके साथ 21 ब्रह्मचारी वेद पाठ के लिए पधारे हुए थे जो पीत वस्त्रों में सभी के आकर्षण का केन्द्र बने रहे। यज्ञ प्रक्रिया का सम्पूर्ण संचालन गुरुकुल कांगड़ी के प्रो. डॉ. सोमदेव शतांशु ने किया। जिनके निर्देशन में पूर्ण वैदिक रीति से यज्ञ का अनुष्ठान किया गया। इस विशेष अवसर पर हरियाणा के महामहिम राज्यपाल प्रो. कप्तान सिंह सोलंकी मुख्य यजमान के रूप में यज्ञवेदी पर शोभायमान थे। विशिष्ट यजमान के रूप में केन्द्रीय मंत्री राव इन्द्रजीत सिंह लोकसभा के सदस्य डॉ. सत्यपाल सिंह, हरियाणा सरकार में राज्यमंत्री श्री कृष्ण कुमार बेदी, जी.टी.वी. के मालिक श्री सुभाष चन्द्रा, स्थानीय विधायक श्री सुधा सोम, देवीलाल विश्वविद्यालय सिरसा के कुलपति श्री राधेश्याम शर्मा आदि के अतिरिक्त सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी कर्मवीर योगी, स्वामी चित्तेश्वरानन्द, स्वामी धर्मदेव पटौदी, श्री धर्मवीर सांसद भिवानी, आर.एस.एस. के प्रचारक श्री इन्द्रेश कुमार, डॉ. अनिल आर्य, श्री राम कुमार सिंह आर्य, श्री माधव सिंह आर्य, आचार्य सन्तराम, ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य, श्री बजरंग लाल आर्य हिसार, मास्टर भगवान सिंह एवं बलराम आर्य आदि गणमान्य महानुभावों ने मंच की शोभा बढ़ाई।

यज्ञ में आहुति प्रदान करने के पश्चात् सम्पूर्ण कार्यक्रम के स्वागताध्यक्ष आर्य समाज हिसार के संरक्षक हरियाणा के पूर्व मंत्री श्री हरिसिंह सैनी ने सभी का स्वागत करते हुए महामहिम राज्यपाल जी से निवेदन किया कि पूरे प्रदेश में यज्ञ परम्परा को बढ़ावा दिया जाये और खेती में प्रयोग किये जाने वाले रासायनिक खाद एवं कीटनाशक दवाईयों के माध्यम से भोजन सामग्री को विषाक्त बनाने के विरुद्ध सरकार वैकल्पिक उपाय खोजे। पूरे कार्यक्रम के संयोजक श्री गोपाल शर्मा ने अथक परिश्रम से आयोजित इस यज्ञ में भाग लेने वाले विशिष्ट अतिथियों, यजमानों, कार्यकर्ताओं एवं अन्य विभिन्न तरीकों से योगदान देने वाले सहयोगियों का धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम शांति पाठ के साथ सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

स्वर्गीय धर्मपाल विद्यार्थी जन्मशताब्दी समारोह, आगरा में भव्यतापूर्ण ढंग से मनाया गया

आगरा के प्रसिद्ध समाजसेवी स्वर्गीय धर्मपाल विद्यार्थी की जन्मशताब्दी के अवसर पर एवं स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस के उपलक्ष्य में माथुर वैश्य भवन, पंचकुईंया आगरा में 25 दिसम्बर, 2015 को बड़े उत्साह के साथ एक भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर प्रातः 9 से 11 बजे तक स्वामी विश्वानन्द जी के ब्रह्मत्व में विशेष यज्ञ का अनुष्ठान किया गया। जिसमें सैकड़ों श्रद्धालुओं ने आहुतियाँ प्रदान की। यजमान के पद को स्वर्गीय धर्मपाल विद्यार्थी के सुपुत्र श्री सुशील विद्यार्थी ने अपनी पत्नी एवं परिवार के समस्त सदस्यों सहित उपस्थित होकर सुशोभित किया। उन्होंने अपने पिता के द्वारा की गई समाजसेवा से प्रेरणा लेकर स्वयं सेवा कार्यों में समर्पित भाव से जुटने के लिए आहुति देकर संकल्प लिया। यज्ञ के उपरान्त सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी का विशेष उद्‌बोधन हुआ।

स्वामी जी ने बड़ी प्रखरता के साथ यज्ञ की प्रभावशाली व्याख्या की। उन्होंने कहा कि यज्ञ के तीन अर्थ होते हैं। त्याग, बलिदान व शुभकर्म। इससे स्वतः ही यज्ञ की महत्ता परिलक्षित हो जाती है। उन्होंने कहा कि यज्ञ के तीन उपांग होते हैं देवपूजा, दान तथा संगतिकरण। संगतिकरण का अर्थ संगठन लिया जा सकता है। जिसका तात्पर्य धार्मिक प्रवृत्ति के लोगों को सत्य प्रयोजन के लिए संगठित करना। उन्होंने कहा कि मंत्रों में शक्तियों के अनेक श्रोत दबे पड़े हैं। मंत्रोच्चारण से एक विशिष्ट प्रकार की ध्वनि तरंगे निकलती हैं और उनका प्रभाव विश्वव्यापी प्रकृति पर सूक्ष्म जगत पर तथा प्राणियों के स्थूल तथा सूक्ष्म शरीरों पर पड़ता है। यज्ञ प्रक्रिया में भाग लेने से आत्मा पर चढ़े हुए मल विक्षेप दूर होते हैं। जिसके फलस्वरूप उसमें तेजी से ईश्वरीय प्रकाश जागता है तथा आत्मा का परमात्मा से मिलन का मार्ग प्रशस्त होता है। वास्तव में यज्ञ की ऊष्मा मनुष्य के अन्तःकरण पर देवत्व की छाप डालती है।

यज्ञ के उपरान्त खचाखच भरे समारोह हाल में शताब्दी समारोह प्रारम्भ हुआ। जिसकी अध्यक्षता सार्वदेशिक सभा के कार्यकारी प्रधान ओजस्वी वक्ता श्री सत्यव्रत सामवेदी जी ने की तथा पूरे कार्यक्रम का कुशल संयोजन तथा आयोजन श्री रमाकान्त सारस्वत ने बड़ी कुशलता से सम्भाला। इस अवसर पर मुख्य रूप से स्वामी शिवानन्द, स्वामी विश्वानन्द, श्रीमती शांति नागर, श्रीमती सरोज गौरदार, श्री अमरीश पटेल, श्री उमेश चन्द्र कुलश्रेष्ठ, श्रीमती अनुराधा आदि ने अपने विचार रखे। श्री सुशील कुमार विद्यार्थी ने आगन्तुक महानुभावों का शॉल तथा स्मृति चिन्ह देकर स्वागत किया। सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने अपने उद्‌बोधन में स्वर्गीय धर्मपाल विद्यार्थी को एक प्रेरणास्रोत के रूप में प्रस्तुत करते हुए उनके पदचिन्हों पर चलने की प्रेरणा दी। उन्होंने कहा कि धर्मपाल विद्यार्थी एक उच्चकोटि के समाजसेवी, शिक्षाप्रेमी तथा दानबीर एवं समाज के हर अच्छे कार्य में बढ़–चढ़कर भाग लेने वाली महान आत्मा थे। उनके जीवन से वर्तमान पीढ़ी को विशेष प्रेरणा लेनी चाहिए। स्वामी जी ने अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन पर भी प्रकाश डाला और आर्यजनों से अपील की कि स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा स्थापित गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली को हम सब पुनः लागू कराने की कोशिश करें। उन्होंने कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द जी का शुद्धि आन्दोलन तथा अछूतोद्धार आन्दोलन आज भी उतना ही महत्त्वपूर्ण है जितना पहले था।

अध्यक्षीय उद्‌बोधन में सार्वदेशिक सभा के कार्यकारी प्रधान श्री सत्यव्रत सामवेदी जी ने देश की वर्तमान परिस्थितियों पर अपना आक्रोश व्यक्त करते हुए कहा कि आज भारत में नशे की आंधी चल रही है, बलात्कार तथा अपहरण हो रहे हैं, गुंडागर्दी के बल पर आतंकवाद सिर उठा रहा है, नैतिक मूल्यों का पूर्णतया ह्रास हो गया है, राजनीति में भ्रष्टाचार की सडांध उठ रही है ऐसी स्थिति में हमें स्वर्गीय धर्मपाल विद्यार्थी तथा स्वामी श्रद्धानन्द जी से प्रेरणा लेकर इन सब बुराईयों के विरुद्ध जबरदस्त आन्दोलन करने का संकल्प लेना होगा। श्री सामवेदी जी ने आर्यों को फिर से पहली वाली लगन पैदा करने की सलाह दी। उन्होंने कहा कि आज सारा देश आर्य समाज की तरफ देख रहा है। अतः हमें संगठित होकर देश की ज्वलन्त समस्याओं के समाधान के लिए राष्ट्रीय स्तर पर आन्दोलन कर देश की जनता का नेतृत्व करना चाहिए। इस अवसर पर आगरा के अनेक गणमान्य महानुभावों का सम्मान किया गया। अन्त में कार्यक्रम के संयोजक श्री रमाकान्त सारस्वत ने उपस्थित जन–समूह का तथा समस्त सहयोगियों का आभार व्यक्त किया। प्रीति भोज के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

पृष्ठ–1 का शेष

हरियाणा प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन जीन्द में हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न

ढिल्लो ने किया। सम्मानित महानुभावों में मास्टर जगदीश आर्य सहित कई व्यक्तियों का सम्मान किया गया।

पूरे कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए सार्वदेशिक सभा के यशस्वी प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने अपने अध्यक्षीय उद्‌बोधन में आर्यों का आह्‌वान किया कि अब राष्ट्रीय स्तर पर गौहत्या एवं गौमाँस के निर्यात के विरुद्ध आर्य समाज जबरदस्त अभियान चलायेगा और इसमें आप सबका सहयोग अपेक्षित है। इसके साथ–साथ स्कूलों की पाठ्यपुस्तकों में पढ़ाई जा रही तथ्यहीन बातें जिनमें मुख्य रूप से 'आर्य लोग भारत के निवासी नहीं हैं' अपितु बाहर से आये थे। 'आर्य लोग गौमाँस भक्षण तथा सुरापान करते थे', 'आर्य लोग देवी देवताओं की पूजा करते थे', 'आर्यों ने यहाँ के मूल निवासी द्रविड़ों का दमन किया' आदि के विरुद्ध जन–जागरण करके आन्दोलन चलाया जायेगा तथा सरकार से माँग की जायेगी कि उपरोक्त तथ्यहीन प्रकरण पाठ्य पुस्तकों से हटाये जायें तथा आर्यों की गरिमा तथा गौरव के विरुद्ध नई पीढ़ी के बच्चों में दुष्प्रचार बन्द किया जाये। स्वामी जी ने कहा कि जैसे आर्य समाज कन्या भ्रूण हत्या, नशाखोरी, धार्मिक पाखण्ड, अश्लीलता एवं महिला उत्पीड़न के विरुद्ध देश व्यापी अभियान चला रहा है उसी के अन्तर्गत भविष्य में गौहत्या एवं आर्यों के सम्बन्ध में पढ़ाई जाने वाली तथ्यहीन बातों के विरुद्ध भी जबरदस्त अभियान चलायेगा। स्वामी जी ने स्वामी श्रद्धानन्द जी तथा रामप्रसाद बिस्लिम के जीवन की प्रेरणास्पद घटनाएँ बताकर युवकों का आह्‌वान किया कि वे देश सेवा के लिए आगे आयें। कार्यक्रम के संयोजक त्यागी, तपस्वी संन्यासी स्वामी रामवेश जी ने सार्वदेशिक सभा द्वारा घोषित कार्यक्रम का तहेदिल से समर्थन किया और नशाबन्दी आन्दोलन को और गति देने की घोषणा की। स्वामी जी ने समस्त आर्यजनों का एवं विभिन्न प्रकार के कार्यक्रमों को सफल बनाने वाले विभिन्न सहयोगियों का हार्दिक धन्यवाद ज्ञापित किया। महासम्मेलन की सफलता में मुख्यरूप से श्री भोमसिंह आर्य, डॉ. राजपाल आर्य, श्री सूरजमल आर्य, वैद्य दयाकृष्ण आर्य, श्री दयानन्द अहीरिका, श्री कर्मपाल आर्य, श्री सूरजमल पहलवान, श्री सुबेर सिंह, श्री जसवन्त आर्य, श्री सत्यपाल आर्य 'सरपंच', श्री विजय आर्य, श्री पृथ्वी सिंह चहल, श्री विद्यासागर शास्त्री, श्री सूर्यदेव आर्य आदि ने विशेष भूमिका निभाई। श्री रणवीर राठी, श्री नारायण उर्फ पानू मास्टर जगवीर सिंह आदि ने दिनरात एक करके सम्मेलन की सफलता में महत्त्वपूर्ण योगदान प्रदान किया।

सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने दीप प्रज्ज्वलन के साथ किया आर्य समाज अंधेरी मुम्बई के चार दिवसीय वार्षिकोत्सव का भव्य उद्‌घाटन

आर्य समाज अंधेरी, मुम्बई का वार्षिकोत्सव 24 से 27 दिसम्बर, 2015 तक आयोजित किया गया जिसका उद्‌घाटन सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने अपने कर–कमलों से दीप प्रज्ज्वलित कर किया। इस अवसर पर प्रसिद्ध फिल्म अभिनेता श्री सन्नी देओल, प्रसिद्ध वैदिक विद्वान आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय, स्वामी यज्ञमुनि एवं मुम्बई के अनेकों गणमान्य महानुभाव उपस्थित थे। दीप प्रज्ज्वलन के उपरान्त यज्ञ का अनुष्ठान किया गया। इस यज्ञ के ब्रह्मा पद को आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय ने सुशोभित किया। कन्या गुरुकुल दाधिया, राजस्थान की ब्रह्मचारिणियाँ तथा उनकी आचार्या प्रेमलता जी वेदपाठ के लिए उपस्थित थीं। आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय ने अत्यन्त पांडित्यपूर्ण विधि से यज्ञ को सम्पन्न कराया। तत्पश्चात् फिरोजपुर से पधारे श्री विजय आनन्द के भजन एवं आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय का प्रभावशाली प्रवचन हुआ। आचार्य जी ने वेद मंत्रों की विज्ञान सम्मत व्याख्या करके उपस्थित जन–समूह को अत्यधिक प्रभावित किया। प्रवचन के पश्चात् दर्जनों बुद्धिजीवियों ने उन्हें घेर लिया तथा बधाई देकर उनकी भूरि–भूरि प्रशस्ति की।

इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने अपने संक्षिप्त प्रवचन में यज्ञ की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए जनता का आह्‌वान किया कि जैसे देवयज्ञ बाह्य प्रदूषण को ठीक करता है वैसे ही हम अपने हृदय में यज्ञरूपी अग्नि प्रज्वलित कर भीतर के प्रदूषण को ठीक करें। काम, क्रोध, मद, मोह, लोभ आदि दोष हमारे अन्तःकरण को प्रदूषित करते हैं। अतः इसको दूर करने के लिए हम जीवन को यज्ञमय बनायें। विदित हो कि 23 दिसम्बर, 2015 को प्रातः 6 से 8 बजे तक आर्य समाज अंधेरी, मुम्बई के प्रधान श्री हरीश जी के नेतृत्व में निकाली गई प्रभातफेरी में स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी श्रद्धानन्द जी तथा स्वामी यज्ञमुनि ने भाग लेकर आर्यों का उत्साहवर्द्धन किया था। आर्य समाज अंधेरी का यह कार्यक्रम 27 दिसम्बर, 2015 तक निरन्तर चलता रहा तथा आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय जी के प्रवचनों की वर्षा होती रही जिसकी पूरी मुम्बई में धूम मची रही।

आर्य समाज सैक्टर-22ए, चण्डीगढ़ में सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी की अध्यक्षता में

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान समारोह सम्पन्न

चण्डीगढ़ की प्रसिद्ध आर्य समाज सैक्टर–22ए में गत् 23 से 27 दिसम्बर, 2015 तक अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी के बलिदान दिवस के अवसर पर विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें चतुर्वेद शतक यज्ञ, भजन एवं उपदेश के कार्यक्रम होते रहे।

इस अवसर पर आचार्य रणधीर शास्त्री मेरठ यज्ञ के ब्रह्मा, आचार्य राजेन्द्र प्रसाद पुरोहित यज्ञ संयोजन एवं मंत्रपाठ तथा जबर सिंह खारी मुजफ्फरनगर की भजन पार्टी द्वारा भजनों का कार्यक्रम चलता रहा। 26 दिसम्बर, 2015 को सायं 5.30 से 8.00 बजे तक स्त्री आर्य समाज के संयोजन में संगीत, संध्या का कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसकी अध्यक्षता श्रीमती ऊषा जीवन मंत्राणि आर्य महिला मंडल पंचकुला ने की। इसके अतिरिक्त श्रीमती अंजू आहुजा, आचार्य रणधीर शास्त्री के प्रवचन एवं श्रीमती संतोष आर्या, श्री जबर सिंह खारी तथा कुमारी नम्रता सोनी के भजनों का कार्यक्रम चलता रहा। स्वामी विश्वानन्द जी ने आशीर्वचनों के द्वारा अपना सम्बोधन दिया। 27 दिसम्बर, 2015 को प्रातः 8 से 9.30 बजे यज्ञ की पूर्णाहुति का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य रणधीर सिंह शास्त्री द्वारा यजमानों को आशीर्वाद प्रदान करने के उपरान्त सार्वदेशिक सभा के सम्मानित प्रधान स्वामी आर्यवेश जी का संक्षिप्त तथा सारगर्भित प्रवचन हुआ। स्वामी जी द्वारा की गई यज्ञ की तर्कपूर्ण एवं प्रभावशाली व्याख्या से सभी यज्ञप्रेमी बन्धु कृत–कृत हो गये। यज्ञ की पूर्णाहुति के पश्चात् ध्वजारोहण स्वामी आर्यवेश जी के कर–कमलों से हुआ। उनके साथ आर्य समाज के यशस्वी प्रधान श्री सोमदत्त शास्त्री, मंत्री श्री प्रेमचन्द गुप्ता, कोषाध्यक्ष श्री बनी सिंह, स्वामी विश्वानन्द जी, आचार्य रणधीर शास्त्री, डॉ. नरेन्द्र आहूजा, श्री विवेक जी आदि भी उपस्थित रहे।

ध्वजारोहण के पश्चात् वेद भवन में श्रद्धानन्द बलिदान दिवस के उपलक्ष्य में आहुत कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। इस समारोह की अध्यक्षता का दायित्व सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने संभाला। निरन्तर 4 घण्टे चले इस भव्य कार्यक्रम में जबर सिंह खारी एवं श्रीमती संतोष आर्या ने अपने भजनों तथा गीतों के द्वारा स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन पर प्रकाश डालते हुए समा बांध दिया। उनके गीतों से प्रभावित होकर श्रोताओं ने उन्हें विशेष पारितोषिक भी प्रदान किये। इसके अतिरिक्त स्वामी विश्वानन्द, आचार्य रणधीर, डॉ. नरेन्द्र आहूजा विवेक एवं श्री अशोक पाल जग्गा एडवोकेट ने भी अपने विचार रखे। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में चण्डीगढ़ कांग्रेस के अध्यक्ष श्री प्रदीप छावड़ा एवं केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. अनिल आर्य विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे।

डॉ. अनिल आर्य ने अपने उद्बोधन में स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा प्रारम्भ किये गये शुद्धि आन्दोलन को पुनः प्रारम्भ करने पर बल दिया, शहीदों का स्मरण करते हुए उन्होंने एक पद्य के माध्यम से अपनी भावना व्यक्त करते हुए कहा कि – उनकी तुर्बत पर एक दिया भी नहीं, जिनके खून से जले थे चिरागे वतन। मकबरे उनके चमकते हैं, जिन्होंने बेचे थे शहीदों के कफन।। डॉ. अनिल जी के ओजस्वी व्याख्यान से प्रभावित होकर श्रोताओं ने स्वामी श्रद्धानन्द जी अमर रहें के नारों से आकाश को गुंजायमान कर दिया।

इस अवसर पर अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने लगभग एक घण्टे तक धारा प्रवाह स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन पर ओजस्वी एवं प्रभावशाली शैली में प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि शारीरिक दृष्टि से स्वामी श्रद्धानन्द जी का कद इतना बड़ा था कि बड़ी से बड़ी भीड़ में भी वे सबसे अलग तथा ऊँचे दिखाई देते थे। उसी प्रकार उनका राजनैतिक एवं सामाजिक कद भी तत्कालीन समाज में सर्वाधिक ऊँचा था। उनके इस राजनैतिक एवं सामाजिक कद को हम उनकी हत्या के बाद कांग्रेस अधिवेशन में पारित शोक प्रस्ताव से माप सकते हैं। जब स्वामी जी की दिल्ली में एक धर्मान्ध व्यक्ति द्वारा हत्या कर दी गई तब महात्मा गाँधी तथा कांग्रेस के समस्त शीर्षस्थ नेता पूर्व प्रायोजित कांग्रेस अधिवेशन में भाग लेने के लिए आसाम जा रहे थे। पटना के रेलवे स्टेशन पर महात्मा गाँधी को वहाँ के स्टेशन मास्टर ने एक तार दिया जो स्वामी श्रद्धानन्द जी के छोटे पुत्र इन्द्रविद्यावाचस्पति द्वारा भेजा गया था। उस तार में स्वामी श्रद्धानन्द जी की हत्या का समाचार था। महात्मा गाँधी तार को पढ़कर स्तब्ध रह गये और उन्होंने तुरन्त प्रभाव से कांग्रेस के तमाम वरिष्ठ नेताओं को जो उसी रेल में सफर कर रहे थे उनको अपने डिब्बे में बुलवाया और उनके साथ स्वामी जी की हत्या से उपजने वाली स्थिति पर गम्भीर विचार–विमर्श किया। परिणामस्वरूप सभी नेता कांग्रेस अधिवेशन में आसाम पहुँचे और शीघ्रातिशीघ्र सभा आयोजित करके दिवंगत आत्माओं के प्रति शोक प्रस्ताव प्रस्तुत किये जाने लगे। जब स्वामी श्रद्धानन्द जी के लिए शोक प्रस्ताव प्रस्तुत किया जाने लगा तब कांग्रेस के इतिहास में पहली बार प्रचलित परम्परा को तोड़कर स्वयं महात्मा गाँधी ने खड़े होकर कांग्रेस अध्यक्ष से शोक प्रस्ताव स्वयं ले लिया और यह कहकर प्रस्ताव स्वयं पेश किया कि जिस महामानव के लिए यह शोक प्रस्ताव प्रस्तुत किया जा रहा है उनका राजनैतिक एवं सामाजिक कद इतना ऊँचा है जिसके लिए कांग्रेस अध्यक्ष के बदले मैं स्वयं प्रस्ताव रख रहा हूँ। प्रस्ताव पारित होने के साथ ही अधिवेशन समाप्ति की घोषणा कर दी गई और सभी नेता स्वामी श्रद्धानन्द जी की अन्त्येष्टि में भाग लेने के लिए दिल्ली की ओर दौड़ पड़े। स्वामी आर्यवेश जी ने बताया कि यद्यपि स्वामी श्रद्धानन्द जी की हत्या एक मतान्ध मुसलमान के द्वारा की गई थी लेकिन उनकी प्रतिष्ठा और सम्मान जितना हिन्दू समाज में था उतना ही मुस्लिम एवं अन्य सम्प्रदाय के लोगों में भी था। इसका प्रबल प्रमाण यही है कि उन्हें दिल्ली की ऐतिहासिक जामा मस्जिद में बुलाकर मुस्लिम समाज ने उस मिम्बर पर बैठकर व्याख्यान देने का आग्रह किया था जहां से केवल जामा मस्जिद के शाही इमाम ही अपना भाषण दे सकते हैं या मुसलमानों के लिए फतवे जारी कर सकते हैं। जामा मस्जिद मिम्बर मुसलमानों के लिए बेहद महत्त्वपूर्ण एवं पवित्र माना जाता है। इससे स्वामी श्रद्धानन्द जी के प्रति मुस्लिम समाज का सम्मान प्रकट होता है। स्वामी आर्यवेश जी ने स्वामी श्रद्धानन्द के जीवन की विभिन्न घटनाओं को भावपूर्ण ढंग से सुनाकर श्रोताओं को रूला दिया। सैक्टर–22ए के समस्त पदाधिकारियों मुख्यतया श्री सोमदत्त आर्य प्रधान ने स्वामी जी के इस ओजस्वी व्याख्यान के लिए उनका हार्दिक आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर चण्डीगढ़ तथा पंचकुला की आर्य समाजों के प्रतिनिधि भारी संख्या में उपस्थित थे। कार्यक्रम के अन्त में कुछ विशिष्ट महानुभावों को शॉल तथा स्मृति चिन्ह भेंटकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम बेहद उत्साह के वातावरण में सम्पन्न हुआ।

शुभ सूचना ओ३म् शुभ सूचना

ऋषि निर्वाण दिवस एवं दीपावली के शुभ अवसर पर
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित

सत्यार्थ प्रकाश

ऋषिवर दयानन्द सरस्वती द्वारा विरचित
अद्भुत और अनुपम कालजयी ग्रन्थ

सत्यार्थ प्रकाश

लागत मूल्य 80/– रुपये

100 प्रति लेने पर मात्र 40 रुपये में दिया जायेगा

भारी छूट पर उपलब्ध

10 से अधिक प्रति लेने पर 50 रुपये में दिया जायेगा

23 गुणा 36 के 16वें साईज तथा पेपर वैक जिल्द में आकर्षक टाइटल के साथ बढ़िया कागज पर प्रकाशित सत्यार्थ प्रकाश उपलब्ध

–: प्रकाशक :–

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

आर्य समाज राजनगर, गाजियाबाद का 31वाँ वार्षिकोत्सव समारोह पूर्वक सम्पन्न

गुरुकुलीय शिक्षा को बढ़ावा देने का ले संकल्प

– स्वामी आर्यवेश

आर्य समाज राजनगर, गाजियाबाद का 31वाँ वार्षिकोत्सव 30 नवम्बर से 6 दिसम्बर, 2015 तक आर्य समाज मंदिर आर–5/50ए, राजनगर, गाजियाबाद (उ. प्र.) में हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर यजुर्वेदीय महायज्ञ बरेली से आमंत्रित स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती जी के ब्रह्मत्व में निरन्तर चलता रहा। आर्य समाज राजनगर के पुरोहित आचार्य रामेश्वर शास्त्री जी के मधुर वेदपाठ ने यज्ञ को अत्यन्त आकर्षण प्रदान किया। इस अवसर पर बिजनौर से पधारे श्री कुलदीप आर्य के भजनों ने श्रोताओं को मंत्रमुग्ध किया। इस वार्षिकोत्सव में यजुर्वेदीय महायज्ञ के अतिरिक्त भजन व प्रवचन सहित अनेकों आयोजन किये गये जिसमें 9वीं से 12वीं कक्षा तक के छात्र–छात्राओं की अन्तर विद्यालय भाषण प्रतियोगिता, समाज सुधार सम्मेलन, वेद सम्मेलन, आध्यात्मिक सम्मेलन तथा महिला सम्मेलन आयोजित किये गये। इन कार्यक्रमों में स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती, सार्वदेशिक सभा के कोषाध्यक्ष पं. माया प्रकाश त्यागी, डॉ. गणेश दत्त शर्मा, डॉ. सुरेन्द्र सिंह पूर्व प्राध्यापक उत्तर पूर्व पर्वतीय विश्वविद्यालय, डॉ. वीरपाल विद्यालंकार, आचार्य चन्द्रपाल शास्त्री, श्री बाबूराम शर्मा विभाकर, कुमारी अंजलि आर्या, डॉ. प्रतिभा सिंघल ने अपने प्रवचनों से अध्यात्म, वैदिक संस्कृति, मानव कल्याण, समाज सुधार, नैतिकता एवं राष्ट्रवाद से ओत–प्रोत प्रवचनों से श्रोताओं को लाभान्वित किया। मुख्य कार्यक्रम 6 दिसम्बर, 2015 को यजुर्वेदीय महायज्ञ की पूर्णाहुति के उपरान्त प्रारम्भ हुआ। यजुर्वेद महायज्ञ की पूर्णाहुति आचार्य विष्णुमित्र मेधार्थी के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुई।

इस अवसर पर संस्कृति रक्षा सम्मेलन का भव्य आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता विख्यात समाज सेवी एवं उद्योगपति श्री ओम प्रकाश आर्य ने की। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित थे। इस अवसर पर स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती, श्री राजेन्द्र त्यागी पार्षद नगर निगम गाजियाबाद, कुमारी अंजलि आर्या, श्री तेजपाल आर्य, श्री सुभाष सिंघल, श्र सुरेन्द्र कुमार, पं. माया प्रकाश त्यागी, श्री प्रवीण आर्य, आचार्य संतराम, श्री रामनिवास आर्य सहित अनेकों गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। इस कार्यक्रम का संचालन श्री सत्यवीर चौधरी ने किया।

इस अवसर पर अपने ओजस्वी उद्बोधन में सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि आज सारे देश में पाश्चात्य सभ्यता का बोलबाला हो रहा है। हमारा युवा अपनी संस्कृति को भूलकर पाश्चात्य संस्कृति में रंगता जा रहा है। गुरु, माता–पिता तथा अन्य आदरणीय व्यक्तियों के सम्मान को उसने तिलांजलि दे दी। स्वामी जी ने कहा कि आज आवश्यकता युवाओं को सही मार्ग पर लाने की है। उन्होंने गुरुकुलीय शिक्षा की महत्ता का दिग्दर्शन कराते हुए कहा कि युवा शक्ति को तथा बच्चों को सही मार्ग पर लाने के लिए सारे देश में गुरुकुलीय शिक्षा को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। गुरुकुलीय शिक्षा की सबसे बड़ी विशेषता है कि इसमें विद्यार्थी अपने माता–पिता तथा अपने घर से दूर रहकर गुरुकुल में सात्विक वातावरण में निवास करके शिक्षा ग्रहण करता है और गुरुकुल के नियमित जीवन से अपने व्यक्तित्व को निखारता है। देश में फैले विषाक्त वातावरण से दूर रहकर वेद शास्त्रों तथा आधुनिक विषयों की शिक्षा से उसका सर्वांगीण विकास होता है और गुरुओं के संरक्षण में वह चरित्र और नैतिकता की शिक्षा को ग्रहण करता है। आज के इस युग में चरित्र को सुधारने की सबसे बड़ी आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि आज आर्य समाज को यह दायित्व उठाना होगा कि वो अपनी समाजों में इस प्रकार की शिक्षा की व्यवस्था करे और अन्यों के साथ अपने बच्चों को गुरुकुल में भेजने के लिए तत्पर हों। उन्होंने कहा कि आर्य समाज द्वारा चलाये जा रहे योग तथा चरित्र निर्माण शिविरों में बच्चों को भेजकर हम उनमें नैतिकता का विकास कर सकते हैं। स्वामी जी ने कन्या भ्रूण हत्या, नशाखोरी, महिला उत्पीड़न, धार्मिक पाखण्ड के विरुद्ध चलाये जा रहे देश व्यापी आन्दोलन में सबके सहयोग की अपील की।

इस अवसर पर पं. माया प्रकाश त्यागी जी ने अपने उद्बोधन में नैतिकता की महत्ता का गुणगान करते हुए कहा कि प्रारम्भ से ही यदि हम अपने बच्चों को नैतिकता का पाठ पढ़ायें और उनको छोटी–छोटी बातों को बताकर अपनी संस्कृति की महत्ता का परिचय करायें तो उनके अन्दर किसी हद तक अपने गुरुजनों और अन्य व्यक्तियों के प्रति सम्मान की भावना निश्चित रूप से बढ़ेगी। इन छोटी–छोटी बातों को सिखाकर और अपने बच्चों को नित्यप्रति आया समाज के सत्संगों में ले जाकर हम उनको समाज के प्रति उत्तरदायी बनाने का प्रयास कर सकते हैं। कार्यक्रम में स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती, तेजपाल आर्य, श्री सुरेन्द्र कुमार आदि ने भी अपने विचार रखे। कार्यक्रम का संचालन श्री सत्यवीर चौधरी जी ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन आर्य समाज के प्रधान श्री श्रद्धानन्द शर्मा जी ने किया। प्रीतिभोज के साथ कार्यक्रम सफलता के साथ सम्पन्न हुआ।

अर्धकुम्भ मेला 2016 के अवसर पर

सार्वदेशिक सभा, आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड एवं वैदिक विरक्त मण्डल के तत्वावधान में

विशाल वेद प्रचार शिविर का आयोजन एवं पाखण्ड–खण्डिनी पताका का आरोहण

20 मार्च से 13 अप्रैल, 2016 तक

पूर्व वर्षों की भांति अर्धकुम्भ मेला हरिद्वार में जनवरी, 2016 से प्रारम्भ होगा। इस अवसर पर विभिन्न मठ, मंदिर एवं धार्मिक, सामाजिक संस्थाओं के पंडाल सजेंगे। अत: सार्वदेशिक सभा, आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड एवं वैदिक विरक्त मण्डल की संयुक्त बैठक में यह निश्चय किया गया है कि 20 मार्च से 13 अप्रैल, 2016 तक इस अवसर पर हरिद्वार मे आने वाली धर्म पारायण जनता को धर्म के सच्चे स्वरूप से अवगत कराने के लिए एवं नशाखोरी, कन्या भ्रूण हत्या, मांसाहार एवं धार्मिक अन्धविश्वास जैसी कुरीतियों से दूर रहने का संकल्प दिलाने के लिए तथा वेद प्रचार के माध्यम से ईश्वर भक्ति का सच्चा स्वरूप समझाने के लिए एक विशाल वेद प्रचार शिविर का आयोजन किया जायेगा। शिविर में चतुर्वेद पारायण यज्ञ, विभिन्न समस्याओं से सम्बन्धित सम्मेलन योग साधना शिविर तथा नशाखोरी, कन्या भ्रूण हत्या, जैसी सामाजिक बुराईयों के विरुद्ध जन-चेतना रैली आयोजित की जायेगी। इस अवसर पर जहाँ आर्य जगत के उच्चकोटि के विद्वान, भजनोपदेशक एवं कार्यकर्ता जनता का मार्ग दर्शन करेंगे वहीं देश के कोने-कोने से आर्यजन अपनी-अपनी समाजों के बैनर लेकर शिविर में भाग लेंगे।

इस अवसर पर महर्षि दयानन्द की परम्परा को जीवित रखते हुए पाखण्ड खण्डिनी पताका का आरोहण भी किया जायेगा जो मेले में विशेष आकर्षण का कार्य करेगी। आप सभी से निवेदन है कि अभी से मेले में आने का मन बना लें तथा इस महत्त्वपूर्ण आयोजन को सफल बनाने के लिए व्यक्तिगत रूप से तथा अपनी समाज की तरफ से अधिक से अधिक धनराशि तथा खाद्य सामग्री (दाल, चावल, आटा, घी, चीनी, सब्जी आदि) दान स्वरूप देकर पुण्य के भागी बनें तथा वेद प्रचार के इस महत्त्वपूर्ण कार्य में अपना योगदान प्रदान करें। वेद प्रचार शिविर का विस्तृत कार्यक्रम बहुत शीघ्र आर्यजनों के समक्ष प्रस्तुत किया जायेगा। इस सम्बन्ध में विशेष जानकारी के लिए सभा कार्यालय से सम्पर्क किया जा सकता है। अपना सहयोग या दान राशि सार्वदेशिक सभा कार्यालय में व्यक्तिगत रूप से अथवा **''सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा''** के नाम चैक, बैंक ड्राफ्ट आदि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ''दयानन्द भवन'' 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-2 के नाम भेजने की कृपा करें।

निवेदक

स्वामी आर्यवेश	**स्वामी दिव्यानन्द**	**स्वामी प्रणवानन्द**	**प्रो. विट्ठलराव आर्य**	**पं. माया प्रकाश त्यागी**
प्रधान-सार्व.सभा	प्रधान वैदिक विरक्त मण्डल	कोषाध्यक्ष वैदिक विरक्त मण्डल	मंत्री-सार्व.सभा	कोषाध्यक्ष-सार्व.सभा
गोविन्द सिंह भण्डारी	**सुखदेव वर्मा**	**दयाकृष्ण काण्डपाल**	**इं. प्रेम प्रकाश शर्मा**	**डॉ. वीरेन्द्र पंवार**
प्रधान-आ.प्रति. सभा उत्तराखण्ड	कोषाध्यक्ष-आ.प्रति. सभा उत्तराखण्ड	मंत्री-आ.प्रति. सभा उत्तराखण्ड	प्रधान, आर्य समाज देहरादून	प्रबन्धक आर्य समाज हरिद्वार

आर्य समाज की गतिविधियाँ

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान तथा वैदिक विरक्त मण्डल के संयुक्त तत्वावधान में

15 से 22 जनवरी, 2016 तक राजस्थान में निकाली जायेगी

विशाल जन-चेतना यात्रा

जयपुर से प्रारम्भ होकर दौसा, भरतपुर, अलवर, सीकर, चुरू व झुंझूनु जिलों से होकर गुजरेगी जन चेतना यात्रा

गौहत्या, नशाखोरी, कन्या भ्रूण हत्या, अश्लीलता, धार्मिक पाखण्ड, किसानों की दुर्दशा एवं वर्तमान दूषित शिक्षा प्रणाली जैसे ज्वलन्त मुद्दों पर लोगों को किया जायेगा जागरूक

यात्रा का नेतृत्व सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी एवं कार्यकारी प्रधान श्री सत्यव्रत सामवेदी जी करेंगे

समाज में व्याप्त सामाजिक बुराईयों को जड़मूल से निर्मूलन करने के लिए राजस्थान में जन-चेतना यात्रा निकालने का निर्णय लिया गया है। यह यात्रा आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान तथा वैदिक विरक्त मण्डल के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित की जायेगी। इस ऐतिहासिक यात्रा का नेतृत्व सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी तथा कार्यकारी प्रधान एवं राजस्थान के प्रसिद्ध आर्य नेता श्री सत्यव्रत सामवेदी जी करेंगे। इस यात्रा के माध्यम से समाज में व्याप्त सामाजिक बुराईयों नशाखोरी, कन्या भ्रूण हत्या, गोहत्या, अश्लीलता, धार्मिक पाखण्ड, किसानों की दुर्दशा वर्तमान दूषित शिक्षा प्रणाली, महिला उत्पीड़न तथा भ्रष्टाचार आदि के विरुद्ध आम जनता को जागरूक किया जायेगा। राजस्थान में निकाली जाने वाली यह जन चेतना यात्रा जयपुर से प्रारम्भ होकर दौसा, भरतपुर, अलवर, सीकर, चुरू तथा झुंझनू जिलों से होकर गुजरेगी। इस यात्रा में स्थान-स्थान पर सार्वजनिक सभाएं कर लोगों को सामाजिक बुराईयों से अवगत कराया जायेगा तथा इन्हें दूर करने के लिए एकजुटता स्थापित की जायेगी।

इस यात्रा में भारी संख्या में संन्यासी, वानप्रस्थी, महिलायें, कार्यकर्ता तथा आर्य समाज के प्रतिष्ठा प्राप्त भजनोपदेशक सम्मिलित रहेंगे।

इस ऐतिहासिक यात्रा की तैयारी के लिए 21 सदस्यीय संयोजन समिति का गठन राजस्थान सभा के प्रधान श्री हवासिंह आर्य एडवोकेट की अध्यक्षता में किया गया है। जो सज्जन इस यात्रा में सम्मिलित होना चाहते हैं वह अभी से मन बना लें तथा अपनी तथा अपने साथियों की स्वीकृति हमें शीघ्र भिजायें। यात्रा के लिए आर्थिक सहयोग तथा यदि वाहन है तो अपना वाहन डीजल सहित देकर पुण्य के भागी बनें।

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी के आगामी कार्यक्रम

1. गुरुकुल सिंहपुरा सुन्दरपुर, जिला-रोहतक, हरियाणा का वार्षिकोत्सव 30-31 जनवरी, 2016 को सम्पन्न हो रहा है। इस अवसर पर हरियाणा के पूर्व मुख्यमंत्री श्री भूपेन्द्र सिंह हुड्डा को महिलाओं की शिक्षा में महत्वपूर्ण योगदान देने के लिए सम्मानित किया जायेगा। इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के यशस्वी प्रधान स्वामी आर्यवेश जी की गरिमामयी उपस्थिति रहेगी।
2. गुरुकुल नरसिंह नाथ, जिला-वरगढ़, उड़ीसा का वार्षिकोत्सव 8 से 10 जनवरी, 2016 को सम्पन्न होगा। सार्वदेशिक सभा के सम्माननीय प्रधान स्वामी आर्यवेश जी को विशेष रूप से आमंत्रित किया गया है।
3. गुरुकुल आमसेना खरियार रोड, जिला-नवापारा, उड़ीसा का वार्षिकोत्सव 5 से 7 फरवरी, 2016 के अवसर पर प्रतिवर्ष की भांति सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी को मुख्य रूप से आमंत्रित किया गया है।

गुरुकुल प्रभात आश्रम का वार्षिकोत्सव

गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी गुरुकुल प्रभात आश्रम भोला झाल, टीकरी, जानी, मेरठ में मकर सौर संक्रांति के पावन अवसर पर 13 व 14 जनवरी, 2016 तदनुसार पौष शुक्ल चतुर्थी एवं पंचमी वि. सं. 2072, बुधवार व गुरुवार को वार्षिकोत्सव हर्षोल्लास पूर्वक मनाया जा रहा है।

जहाँ 13 जनवरी, 2016 को वेदों के मूर्धन्य विद्वान् स्वामी समर्पणानन्द सरस्वती जी (पं. बुद्धदेव विद्यालंकार) की पुण्यतिथि के अवसर पर अखिल भारतीय वैदिक शोध संगोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है। जिसका विषय है – "वेदानुशीलन का अतीत और अनागत" इसमें देश के विभिन्न स्थानों से आये हुए विद्वज्जन वेदपाठियां की परंपरा, वैदिक व्याख्या में व्याकरण की उपयोगिता औरवेदों के विविध वैज्ञानिक अर्थ जैसे उपशीर्षकों पर अपना शोध लेख प्रस्तुत करेंगे, जो अन्तर्राष्ट्रीय मानक त्रैमासिकी शोध पत्रिका 'पावमानी' में प्रकाशित किये जायेंगे।

10 जनवरी, 2016 को प्रारम्भ किये गये यजुर्वेद पारायण महायज्ञ की पूर्णाहुति, नवप्रविष्ट ब्रह्मचारियों का उपनयन संस्कार तथा वेदारम्भ संस्कार 14 जनवरी को होगा। जिसमें समागत विद्वानों के प्रवचन एवं सुप्रसिद्ध भजनोपदेशकों के भजन, ब्रह्मचारियों के आकर्षक एवं रोचक बौद्धिक एवं शारीरिक बल प्रदर्शन जैसे कार्यक्रम होंगे। इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी प्रधान स्वामी आर्यवेश जी का सान्निध्य भी प्राप्त रहेगा। अतः आप सभी वेदानुरागी सज्जन इष्टमित्रों सहित सपरिवार गुरुकुल प्रभात आश्रम में सादर आमन्त्रित हैं। अधिक से अधिक संख्या में पधारकर धर्मलाभ उठायें एवं पुण्य के भागी बनें।

निवेदक – स्वामी विवेकानन्द सरस्वती, गुरुकुल प्रभात आश्रम

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के 37 वें वार्षिकोत्सव के उपलक्ष्य में

आर्य नेता, शिक्षाविद् डा. अशोक कुमार चौहान के सानिध्य एवं
युवा वैदिक विद्वान डा. जयेन्द्र आचार्य के ब्रह्मत्व में

251 कुण्डीय विराट् यज्ञ

एवम्

अखिल भारतीय आर्य महासम्मेलन

दिनांक : 5, 6, 7 फरवरी 2016 (शुक्र, शनि व रविवार)

स्थान: अजमल खाँ पार्क, करोलबाग, नई दिल्ली-110005

विराट् शोभा यात्रा: शुक्रवार 5 फरवरी 2016, प्रात: 10:30 बजे

रूट: अजमलखाँ पार्क से चलकर फैज रोड, मॉडल बस्ती, ईस्ट पार्क रोड, डोरीवालान, देशबन्धु गुप्ता मार्ग, आर्य समाज रोड, करोल बाग, मास्टर पृथ्वीनाथ मार्ग होते हुए अजमल खाँ पार्क में दोपहर 1:30 बजे समापन।

मुख्य आकर्षण

* आर्य युवा सम्मेलन * वेद सम्मेलन * शिक्षा-संस्कृति रक्षा सम्मेलन
* भव्य संगीत संध्या * नारी शक्ति सम्मेलन * राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन

प्रात: से रात्रि निरन्तर तीनों दिन ऋषि लंगर की सुन्दर व्यवस्था

अपील

इस रचनात्मक विशाल कार्यक्रम में आपका तन, मन, धन से सहयोग अपेक्षित है कृपया दानराशी क्रास चैक/ड्राफ्ट द्वारा "केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली" के नाम से कार्यालय के पते पर भिजवायें। ऋषि-लंगर के लिए आटा, दाल, चावल, चीनी, शुद्ध घी, रिफाईन्ड, सब्जी आदि खाद्य सामग्री देकर पुण्य के भागी बनें

कार्यालय : आर्य समाज, कबीर बस्ती, पुरानी सब्जी मण्डी, दिल्ली-110007, मो. 9868661680
E-mail: aryayouthn@gmail.com Website: www.aryayuvakparishad.com
Group: aryayouthgroup@yahoogroups.com • join-http:// www.facebook.com/group/aryayouth

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा
25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की महत्त्वाकांक्षी योजना

घर-घर तक पहुँचाई जायेगी परमात्मा की वेद वाणी

चारों वेदों का सम्पूर्ण हिन्दी भाष्य

लागत मूल्य 3100/- रुपये

(महर्षि दयानन्द, तुलसीराम स्वामी एवं पं. क्षेमकरण दास कृत)
(10 खण्ड, 9 जिल्दों में)

भारी छूट पर उपलब्ध

एक लाख रुपये अग्रिम देने वाले महानुभावों का चित्र तथा संक्षिप्त परिचय वेद सैट में प्रकाशित किया जायेगा तथा दस वेद सैट उन्हें नि:शुल्क प्रदान किए जायेंगे।

3100/- रुपये का एक वेद सैट 25 प्रतिशत की छूट पर उपलब्ध है
10 अथवा उससे अधिक वेद सैट लेने पर 30 प्रतिशत की छूट दी जायेगी

प्रत्येक आर्य समाज, स्कूलों के पुस्तकालयों, वाचनालयों तथा प्रत्येक घर में परमात्मा की वाणी वेदों का होना आवश्यक है। अधिक से अधिक संख्या में अग्रिम आदेश भेजकर भारी छूट का लाभ उठायें। डाक व्यय 225/- रुपये अलग से देना होगा। प्रारम्भिक स्तर पर 25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की योजना क्रियान्वित की जायेगी। अपना आदेश 'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा' के नाम चैक/बैंक ड्राफ्ट द्वारा "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-2 के पते पर अग्रिम भेजकर अपना वेदों का सैट बुक करा सकते हैं।

-: प्रकाशक :-
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-110002

POSTED AT N.D.P.S.O., N.D.-01 On 01–02 जनवरी, 2016 31 दिसम्बर, 2015 से 06 जनवरी, 2016
प्रकाशन की तिथि : 31 दिसम्बर, 2015 वैदिक सार्वदेशिक
पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/15-17
Licence to Post without prepayment of Postage. [U (c)-289/2015-17]

प्रभु की शरण में यश और सुख

पदं देवस्य नमसा व्यन्तः श्रवस्यवः श्रव आपन् अमृक्तम्।
नामानि चित् दधिरे यज्ञियानि भद्रायां ते रणयन्त सन्दृष्टौ।।

ऋषिः— **भारद्वाजो बार्हस्पत्यः।।** देवता—**अग्निः।।** छन्दः—**निचृत्त्रिष्टुप्।।** ऋ. ६/१/४

विनयः- हे देव! हमने तुम्हारे पद के, तुम्हारे प्राप्तव्य–स्वरूप के, तुम्हारे चरणों के दर्शन पाये हैं, तुम्हें बार–बार नमस्कार करते हुए, तुम्हारी स्तुति करते हुए, तुम्हारे आगे झुकते हुए, भक्तिभाव से आत्म–समर्पण करते हुए ही हमें तुम्हारे दुर्लभ पद के दर्शन मिले हैं। यह सब तुम्हारी भक्ति की महिमा है। इसके साथ ही मेरी पुरानी यश पाने की इच्छा भी तृप्त हो गई है। तुम्हारी कृपा से ऐसा यश मिला है कि जो कि मृदित नहीं हो सकता। बाहर के मनुष्यों से मिलने वाला यश तो उनके अधीन होता है, वह मृदित होता रहता है, परन्तु तुम्हारे पद–दर्शन से जो अन्दर का यश मिला है वह अक्षय है, उसे पाकर अब मुझे किसी वाह्य यश की आकांक्षा नहीं रही है। तेरे सेवकों को संसार में सज्जन पुरुषों द्वारा भी बहुत सा यश मिला करता है, पर वह भी तुझ द्वारा मिले इस आन्तर यश की ही छाया होती है। हे अग्निदेव! तेरी भक्ति ने मुझे उबार दिया हैं तेरी भक्ति का तो इतना प्रताप है कि यदि कोई तेरे यज्ञार्ह (यज्ञ में उच्चारणीय) पवित्र पुण्य नामों को ही केवल धारण करे, उन्हें वाणी से बोलता हुआ भक्ति से हृदय में गुँजाता रहे, तो इस नाम–जपन, नाम–धारण से ही उसका अन्तःकरण इतना शुद्ध हो जाएगा कि उस पर तुम्हारी कल्याणमयी दृष्टि हो जाएगी। तुम्हारी कल्याणमयी दृष्टि में रहता हुआ वह सुख से आगे बढ़ता जाएगा, उसके व्याधि, स्त्यान आदि विघ्न हरण होते जाएंगे, वह निर्विघ्न सुख से उन्नत होता जाएगा।

तो क्या, हे अग्ने। हम तेरे पवित्र नामों को भी धारण न कर सकेंगे? यह तो कम से कम है जो हमें तुम्हारी ओर पहुँचने के लिए करना चाहिए। हमें तो तुम्हारे प्रेम के मार्ग में अन्त तक जाना है और एक दिन यह कह सकने का योग्य होना है "हमने तेरे पद के दर्शन पा लिए हैं और अनश्वर यश के भागी हो गये हैं।"

शब्दार्थः- **श्रवस्यवः**= यश की इच्छावाले हमने **देवस्य**=तुझदेव के पदम्=प्राप्तव्य स्वरूप को **नमसा व्यन्तः**=नमस्कार द्वारा देखते हुए **अमृक्तम्**=नृदित होने वाले **श्रवः**=यश को **आपन्**=प्राप्त किया है। जो लोग **यज्ञियानि**=यज्ञार्ह **नामानि चित्**=नामों को ही **दधिरे**=धारण करते हैं वे भी **ते भद्रायां सन्दृष्टौ**=तेरी कल्याणमयी दृष्टि में **रणयन्त**=रहते हुए सुख पाते है।।

साभार- 'वैदिक विनय' से
आचार्य अभयदेव विद्यालंकार

प्रतिष्ठा में :—

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

सोशल मीडिया के माध्यम से
स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें
www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।
ई-मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

एस.एस. डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल एवं एस.एस. डी.ए.वी. सीनियर सेकेण्ड्री स्कूल अवाखां, दीनानगर जिला गुरुदासपुर (पंजाब) का वार्षिक पारितोषिक वितरण समारोह धूमधाम के साथ सम्पन्न हुआ

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने की अध्यक्षता

एस.एस. डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल तथा एस.एस. डी.ए.वी. सीनियर सेकेण्ड्री स्कूल अवाखां, दीनानगर, पंजाब का वार्षिक पारितोषित वितरण समारोह 18 तथा 19 दिसम्बर, 2015 को सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ।

18 दिसम्बर, 2015 को एस.एस. डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल अवाखां, दीनानगर का पारितोषिक वितरण समारोह सम्पन्न हुआ तथा 19 दिसम्बर, 2015 को एस.एस. डी.ए.वी. सीनियर सेकेण्ड्री स्कूल अवाखां, दीनानगर का पारितोषिक वितरण समारोह सम्पन्न हुआ।

18 दिसम्बर, 2015 को सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी की अध्यक्षता में अत्यन्त शानदार ढंग से आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि सरदार अमरदीप सिंह– जिला शिक्षा अधिकारी गुरुदासपुर, विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री बिशन दास धुप्पर विधानसभा क्षेत्र प्रभारी दीनानगर, सम्मानित अतिथि श्री राकेश महाजन प्रधान नगर परिषद् दीनानगर, श्री देवी दयाल भण्डारी बी.पी.ई.ओ. दीनानगर, सरदार जसकरण सिंह प्रिंसिपल सरकारी सीनियर सेकेण्ड्री स्कूल दीनानगर मुख्य रूप से पधारे।

19 दिसम्बर को हुए पारितोषिक वितरण समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में सरदार सलविंदर सिंह पी.पी.एस. (एस.पी.एचक्यू) गुरुदासपुर, विशिष्ट अतिथि प्रो. स्वतन्त्र कुमार पूर्व उपकुलपति गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार, सम्मानित अतिथि ठाकुर कुलदीप सिंह पी.पी.एस. (डी.एस.पी. आर–1 पठानकोट), श्री राज कुमार शर्मा (एस.एच.ओ. सदर, पी.एस. गुरुदासपुर) की उपस्थिति से मंच शोभायमान हुआ।

कार्यक्रम के अन्तर्गत विद्यालय के छात्रों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत कर अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। इस अवसर पर सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने दोनों कार्यक्रमों में अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में छात्रों को अपने जीवन में सदाचार, संयम, अनुशासन, कर्त्तव्य परायणता, ईमानदारी एवं देशभक्ति आदि के गुण अपनाने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि इन गुणों से ही व्यक्ति के जीवन का निर्माण होता है। स्वामी जी ने अनेकों दृष्टान्त प्रस्तुत कर विद्यार्थियों को उन्नत जीवन जीने की प्रेरणा दी। अन्त में सैकड़ों छात्र–छात्राओं को शिक्षा तथा अन्य क्षेत्रों में प्राप्त उपलब्धियों के लिए पारितोषिक वितरित किये गये। इस पूरे कार्यक्रम के लिए विद्यालय प्रबन्ध समिति के प्रधान श्री अरविन्द मेहता की अध्यक्षता में प्रधानाचार्या श्रीमती कमलेश शर्मा, सचिव श्रीमती मधुर भाषिणी एवं प्रबन्धक श्री अवतार कृष्ण गुप्ता तथा श्रीमती शांता डोगरा ने विशेष पुरुषार्थ करके कार्यक्रम को सफल बनाया। इस महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम में विद्यालय के समस्त अध्यापक तथा अध्यापिकाओं एवं कर्मचारियों ने सफलता में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस अवसर पर प्रबन्ध समिति की ओर से सभी अतिथियों का शॉल तथा स्मृति चिन्ह देकर सम्मान किया गया। इस कार्यक्रम में श्री भारत भूषण जगालिया, श्री बनारसी दास वैद्य, प्रिं. जनकराज महाजन, श्रीमती चंचल गुप्ता, श्री सीताराम, आचार्य सन्तराम आर्य, ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य विशेष रूप से उपस्थित रहे।

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।